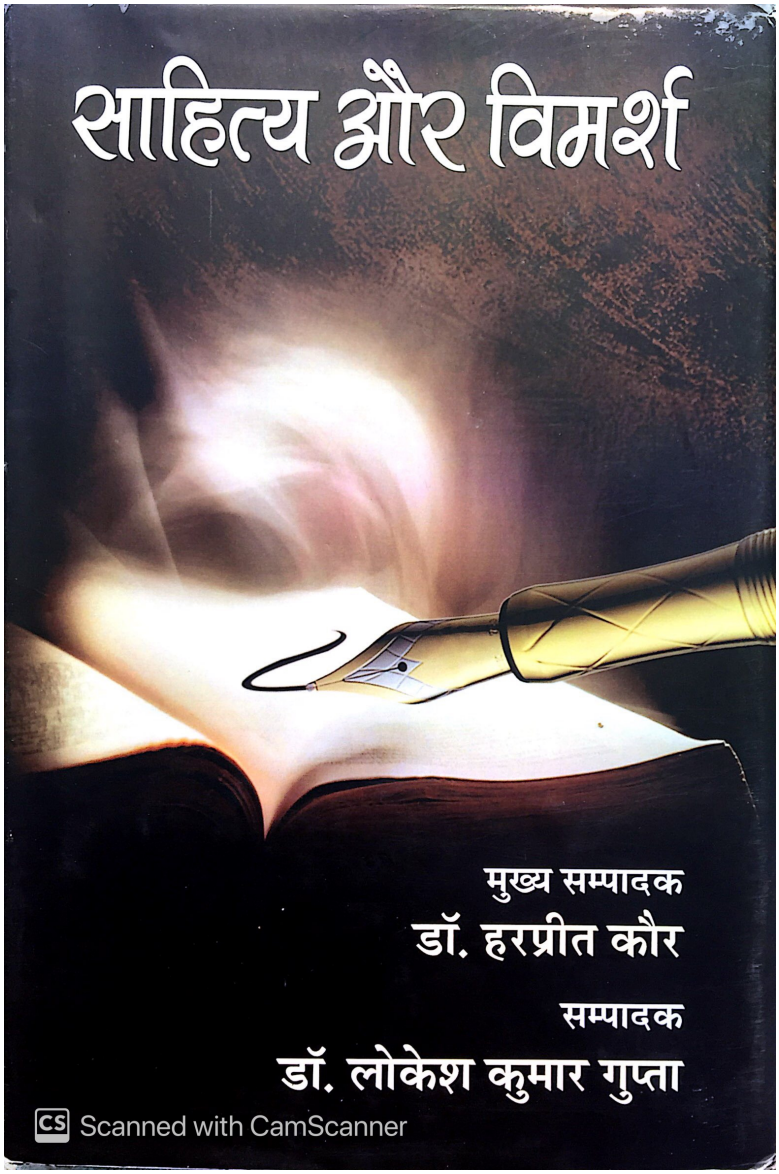

Scanned with CamScanner

ISBN : 978-93-86402-48-6

प्रकाशक :
श्रीसाहित्य प्रकाशन
डी-580, अशोक नगर, गली नं. 4
निकट वजीराबाद रोड, शाहदरा, दिल्ली-110093
मो० : (0) 9873390338
web: shrisahityaprakashan.com
email: shrisahityaprakashan@gmail.com
© सम्पादक
प्रथम संस्करण : 2019
आवरण : अमित कुमार
शब्द-संयोजन : अर्पित वशिष्ठ
मुद्रक : पूजा ऑफसेट प्रिंटर्स
₹ 650

Sahitya aur Vimarsh
Edited by Dr. Harpreet Kaur &
Dr. Lokesh Kumar Gupta

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

गुरु नानक देव जी का गूढ़ दर्शन : *डॉ. हरप्रीत कौर, प्राचार्या* 19

हिन्दी नाटकों में दलित चिन्तन और चेतना : *डॉ. कंचन* 33

दलित साहित्य : अवधारणा और विचार : *डॉ. नवाब सिंह* 39

मुक्ति-द्वार पर दस्तक देती स्त्री-कलमें : *डॉ. अंजना वर्मा* 49

नारी चेतना के स्वर और बाबल तेरा देस में : *डॉ. वीरेन्द्र सिंह* 54

भारतीय प्रिंट मीडिया में स्त्री : *डॉ. सीमा सिंह* 59

बिक्रम सिंह की कहानियों में स्त्री विमर्श : *डॉ. रमेश कुमारी* 65

राससुन्दरी देवी की 'आमार जीबन' : *एक आत्मकथा : डॉ. श्रीता मुखर्जी* 77

नारी विमर्श के विविध आयाम : नाटक 'इला' : *डॉ. पूनम शर्मा* 83

समकालीन नाटकों में नारी-विमर्श : *डॉ. विकास शर्मा* 88

आदिवासी साहित्य में स्त्री विमर्श एवं चिन्तन : *डॉ. राहुल उठवाल* 96

कथा साहित्य में नारी विमर्श और चिन्तन : *बिभा कुमारी* 101

स्त्री-विमर्श : हिन्दी साहित्य के सन्दर्भ में : *डॉ. ममता चावला* 105

मध्यकालीन साहित्य में नारी : *डॉ. रजिन्दर कौर* 110

तुलसीदास के काव्य में नारी दृष्टिकोण : *डॉ. सविता* 116

पंजाबी लोकगीतों में नारी का चित्रण : एक दृष्टिपात : *डॉ. गुरशरण कौर* 122

लोक संस्कृति में नारी वेदना एक अवलोकन : *डॉ. सुनिल कमार* 127

स्त्री विमर्श की नवीन अभिव्यक्ति: नीलदेवी : *डॉ. आशुतोष शर्मा* 132

स्त्री मुक्ति का प्रश्न और मृणाल : *डॉ. रीता दूबे* 137

कबीर के परिप्रेक्ष्य में नारी : *डॉ. चारू आर्या* 142

जातीय दम्भ के कुत्सित मनोविज्ञान को उकेरती सांभरिया की कहानियाँ : *डॉ. शिवताज सिंह* 147

Scanned with CamScanner

लोक संस्कृति में नारी वेदना एक अवलोकन

—डॉ. सुनिल कुमार
सहायक प्रोफेसर, संगीत, विभाग
माता सुन्दरी महिला महाविद्यालय
(दिल्ली विश्वविद्यालय)

लोक संस्कृति केवल पिछड़ी हुई जीवन शैली नहीं है बल्कि मनुष्य जाति के अतीत और वर्तमान का वह लेखा-जोखा है जिसे आधार बनाकर मानव जाति अपने भविष्य को सँवारने का प्रयास करती हैं। लोक एवं संस्कृति शब्दों के गठजोड़ से बना यह वाक्य अपने अर्थों की प्रेरणा प्रदान करता है। लोक साहित्य या लोकगीत हमारे सम्पूर्ण मानव जीवन की विकास यात्रा है एक गाथा है जिसमें मानव जीवन के सुख-दु:ख, हर्ष-विषाद, मिलन-विरह की भावनाएँ दृष्टिगत होती है। सामाजिक रीतियों, कुरीतियों, अच्छी-बुरी परम्पराओं तथा करुणा क्षोभ, प्रतिरोध, प्रेम वात्सल्य, मिलन बिछोह आदि जीवन की समस्त भंगिमाएँ लोक साहित्य लोक गीतों में पायी जाती है। लोक संस्कृति, अस्थाई, निरन्तर एवं गतिशील साथ-साथ होती है। मानव जीवन की समस्त अच्छाइयों, बुराईयों के साथ वह निरन्तर मानवता का मार्ग प्रशस्त करती है। शायद इसीलिए जन साधारण के दर्शन को लोकायत कहते हैं। आप इसे लोक संस्कृति भी कह सकते हैं। लोकायत वेदों को नहीं मानते। ये मानव के द्वारा अर्जित सम्पत्ति से मानव इच्छा की पूर्ति का अपना लक्ष्य मानते हैं। स्वर्ग, नरक, भाग्य, ईश्वर एवं पुनर्जन्म में यकीन नहीं करते और मनुष्य के श्रम पर विश्वास करते हैं। सम्भवत: यही कारण है कि 8वीं शताब्दी के यथास्थितिवादी चिन्तक हरिभद्र ने लोकायतियों को विवेकहीन एवं क्षमताविहीन आचरण करने वाला बताया है। डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल के अनुसार लोक हमारे जीवन का महासमुद्र है, जिसमें भूत, वर्तमान एवं भविष्य सुरक्षित हैं। डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लोक शब्द का अर्थ

Scanned with CamScanner